तापमान 95 डिग्री फेरनहाईट होना अतिआवश्यक है। फिर दूसरे सप्ताह से चौथे सप्ताह तक 5-5 डिग्री तापमान कम करते हुए 80 डिग्री फेरनहाइट तक कर देना चाहिए।

- मुर्गी आवास के ऊपर बोरे, फट्टी आदि बिछा देना चाहिए एवं साइड के पर्दे मोटे बोरे के लगाना चाहिए, ताकि वे ठंडी हवा के प्रभाव को रोक सकें। रात में जाली का लगभग 2 फीट नीचे का हिस्सा पर्दे से ढक दें, इसमें खाली बोरी आदि का इस्तेमाल किया जा सकता है। इससे अंदर का तापमान बाहर की अपेक्षा ऊँचा रहेगा। साथ ही यह ध्यान में रखना चाहिए कि मुर्गी आवास में मुर्गियों की संख्या पूरी हो। जाड़े के मौसम में एक अँगीठी या स्टोव मुर्गीखाने में जला दें, पर अँगीठी अंदर रखने से पहले इसका धुआँ निकाल लें। इस प्रकार दी गई थोड़ी सी गर्मी से न केवल मुर्गीयाँ आराम से रहती हैं, बल्कि मुर्गी आवास का वातावरण भी खुश्क बना रहता है।
- शीतकालीन मौसम में दाने की खपत बढ़ जाती है। यदि दाने की खपत बढ़ नहीं रही है तो इसका मतलब है कि मुर्गियों में किसी बीमारी का प्रकोप चल रहा है। शीतकालीन मौसम में मुर्गियों के पास दाना हर समय उपलब्ध रहना चहिए।
- शीतकालीन मौसम में पानी की खपत बहुत ही कम हो जाती है क्योंकि इस मौसम में पानी हमेशा ठंडा ही बना रहता है, इसलिए मुर्गी इसे कम मात्रा में पी पाती हैं, इस स्थिति से बचने के लिए मुर्गीयों को बार-बार शुद्ध ताजा पानी बदलकर देते रहना चाहिए।

बरसात में कुक्कुट प्रबंधन

बरसात के मौसम में निम्लिखित उपायों द्वारा सफल मुर्गी पालन किया जा सकता है :-

- आवास में यदि कोई सुराग हो तो उस पर डामर/कोलतार का पेंट लगाकर बंद कर दें। यदि घर के छज्जों से बारिश की बौछार आ रही हो तो उस पर चिक या पर्दा डाल दें।
- बरसात के दिनों में बिछावन अधिक गीला हो जाता है, ऐसे में बिछावन की गहराई को और अधिक बढ़ा दें, इसके बाद भी यदि बिछावन गीला हो रहा हो तो 1 कि.ग्रा. चूना 100 वर्ग फुट के अनुसार मिला दे, साथ ही हर दो दिन में बिछावन को उलट पुलट करते रहे, यदि बिछावन का हिस्सा जम गया हो या केक या पत्थर की तरह सख्त हो गया हो तो, उसे फिकवा कर नए बिछावन से बदल दे, इसी प्रकार से यदि बिछावन के नीचे 2 इंच सूखी रेत डाल दी जाये तो बिछावन गीला नहीं होगा।
- अगर मुर्गियों पिंजरा पद्धति में पाली जा रही है तो मुर्गियों की बीट को प्रत्येक दिन साफ करवाते रहना चाहिए, जो सतह बीट के कारण अधिक गीली हो गयी हो, वहाँ सूखा रेत डाल सकते हैं, यदि कैलिफ़ोर्निया पिंजरे है तो बीट के ऊपर चूने का पाउडर छिड़कवा देना चाहिए।
- इस मौसम में मक्खी काफी बढ़ जाती है, अतः मक्खियों से बचाव के लिए मुर्गीघर के चारों और मैलाथिऑन का छिड़काव करवाना चाहिए, इसके साथ ही बीट पर फिनाइल के स्प्रे से मक्खियों से बचाव किया जा सकता हैं।
- बारिश शुरु होने से पहले दाना बनाने के लिए हमेशा सूखा एवं अच्छी गुणवत्ता का अनाज ही खरीदा जाना चहिए, बरसात के समय दाने की खरीद नहीं करना चाहिए, अन्यथा ढुलाई के समय, दाना वातावरण से नमी को अवशोषित कर लेगा और उसमें कवक/मोल्ड का संक्रमण हो सकता है। अधिक मात्रा में दाना न बनाये एक बार बनाया दाना दस दिन के अंदर अवश्य इस्तेमाल कर लें। दाने को किसी ऊँचे प्लेटफार्म पर रखना चाहिए ताकि उसे नमी से बचाया जा सके।

विभिन्न ऋतुओं में कुक्कुट उत्पादन एवं प्रबंधन

प्रज्ञा भदौरिया
केशव
प्रीति ममगई
आशिष मुराई

भा.कृ.अनु.प-कृषि प्रौद्योगिकी अनुप्रयोग अनुसंधान संस्थान
क्षेत्र-1, पं.कृ.वि. परिसर
लुधियाना-141004

कुक्कुट पालन में अलग-अलग ऋतुओं का मुर्गियों की उत्पादकता पर काफी असर पड़ता हैं, जिस पर ध्यान न देने से मुर्गीपालक को आर्थिक हानि उठानी पड़ सकती है। अतः विभिन्न मौसमों जैसे गर्मी, बरसात व सर्दी में निम्लिखित प्रबंधन के तरीके अपनाकर मुर्गीपालक, मुर्गियों को इन मौसमों के दुष्प्रभाव से बचा सकते हैं।

गर्मी में कुक्कुट प्रबंधन

मुर्गीपालन करने वालों के लिए आवश्यक है कि तापमान की तेजी से मुर्गियों को बचाया जाए, क्योंकि मौसमी उतार-चढ़ाव से इनकी मृत्युदर बढ़ सकती है। मुर्गियों में अधिक मृत्युदर होने से किसान या मुर्गीपालकों को भारी वित्तीय हानि उठानी पड़ सकती है। चूजों में गर्मी झेलने की क्षमता अधिक होती है और करीब 42 डिग्री सेंटीग्रेड तापमान तक ये चूज़े आसानी से रह लेते हैं, वयस्क मुर्गियों को गर्मी में अधिक परेशानी होती हैं। अंडे देने वाली मुर्गियों (लेयर) में तापमान सहने की क्षमता मांस के लिए पाली जाने वाली मुर्गियों (ब्रायलर) की तुलना में अधिक होती है। गर्मी के मौसम में थोड़ी सावधानी से मुर्गियों को तेज गर्मी के प्रकोप से बचाया जा सकता है:-

- ❖ गर्मी बढ़ने पर चूजों को बाड़े में ही रखें और खिड़की को पर्दे से आधा ढक दें, जिससे सीधी धूप से बचाव हो सके और हवा का संचारण भी बना रहे।
- ❖ मुर्गीपालक शेड की खिड़कियों पर तेज गर्मी के समय टाट को गीला करके लटका सकते हैं, लेकिन इसमें ध्यान रखें कि टाट खिड़की की जाली से पूरी तरह चिपकी न हो, टाट और खिड़की की जाली में करीब एक से डेढ़ फीट की दूरी हो। इससे हवा का संचारण भी बना रहेगा और गीले टाट से हवा ठंडी भी रहेगी। टाट को समय-समय पर गीला करते रहें।
- ❖ छत की गर्मी कम करने के लिए छत पर धान की पुआल या घास आदि डाल दें या फिर छत पर सफ़ेदी करा दें। सफेद रंग ऊष्मा को कम सोखता है, जिससे छत ठंडी रहती है। आधुनिक मुर्गी फार्म में गर्मी से बचाव के लिए स्प्रिंकलर या फॉगर भी लगा सकते है, जिससे पानी की फुहारें निकलती रहती है। स्प्रिंकलर के साथ पंखे भी जरुर लगे होने चाहिए और कमरे की खिड़की भी खुली होनी चाहिए, जिससे कमरा हवादार और ठंडा रहेगा। गर्मियों में कमरे में एक्जॉस्ट फैन लगा कर हवा का सही संचारण रखें। अधिक गर्मी में कूलरों का भी प्रयोग किया जा सकता है।
- ❖ मुर्गियों के बाड़े/शेड में जरुरत से अधिक मुर्गियाँ रखना हानिकारक होता है। शेड में अधिक भीड़ होने से गर्मी बढ़ेगी और मुर्गियों में हीट स्ट्रोक का अंदेशा बढ़ेगा। मुर्गियों के लिए सही स्थान जो कि ब्रॉयलर फार्म में एक वर्ग फीट प्रति चूजे और लेयर के लिए 2-2.5 वर्ग फीट प्रति बड़ी मुर्गी के हिसाब से जगह की जरुरत होती है।
- ❖ तेज गर्मी में अगर मुर्गियों को एक घंटे भी पानी न मिले तो हीट स्ट्रोक से उनकी मृत्यु हो सकती है। अतः बाड़े में ताजे पानी की आपूर्ति हमेशा रखें। गर्मियों में पानी के बर्तनों की संख्या बढ़ा दें, क्योंकि गर्मी के मौसम में मुर्गियां पानी के बर्तन के चारों ओर बैठ जाती है, जिससे दूसरी मुर्गियों को पानी नहीं मिल पाता है। पानी के बर्तनों की संख्या बढ़ाने के साथ ही यह भी ध्यान रखें कि धातु के बर्तन में पानी जल्दी गर्म हो जाता है और आमतौर पर मुर्गियां गर्म पानी नहीं पीती हैं। इसलिए अगर धातु के बर्तन में पानी रखा है, तो थोड़ी-थोड़ी देर में उसमें ताजा पानी भरते रहें। अगर हो सके तो मिट्टी के बर्तन में पानी रखें।
- ❖ गर्मियों में मुर्गियां दाना कम खाने लगती हैं, जिससे उनमें पोषक तत्वों की कमी होने लगती है। इसीलिए मुर्गियों को पानी में विटामिन और गुड मिलाकर देना लाभदायक रहता है। इसके अलावा, मुर्गियों को दिए जाने वाले दाने को गीला कर सकते हैं। गीला दाना ठंडा होगा जिसका मुर्गियां ज्यादा सेवन करेंगी। परंतु ध्यान रखें कि गीला किया दाना शाम तक खत्म हो जाए वर्ना उसमें बदबू आ सकती है। दाना दिन में 3-4 बार में विभाजित कर दे तथा ठंडे समय जैसे सुबह और शाम दे। मुर्गियों में दाना पेलेट के रुप में देना लाभदायक होगा, जिससे उनकी आहार क्षमता बढ़ जाती है।
- ❖ अगर किसी मुर्गी में गर्मी लगने के लक्षण दिखाई दें, तो उसे धीरे से उठा कर पानी से एक डुबकी देकर छांव में रख दें और इलेक्ट्राल दें, स्वस्थ होने पर वापस बाड़े में डाल दें। यह प्रक्रिया तुरंत की जानी आवश्यक है। देर होने पर मुर्गी मर सकती है।
- ❖ तापमान 42 डिग्री सेंटीग्रेड से ऊपर जाने की स्थिति में मुर्गियों के पानी में एंटी स्ट्रेस दवा और विटामिन सी व विटामिन ई मिला दें। इससे मुर्गियों को गर्मी से निपटने में मदद मिलेगी।

सर्दियों में कुक्कुट प्रबंधन

हालाँकि बड़ी मुर्गियाँ गर्मी की अपेक्षा सर्दी आसानी से सह लेती हैं। बड़ी मुर्गियों के मामले में केवल उनको गर्मी के समय ही सुरक्षित रखने की सावधानी बरतना ही काफी होता है। लेकिन अगर हम मुर्गी व्यवसाय से अधिक फायदा लेना चाहते हैं तो चूजे लाने से पहले या बाद में निम्नलिखित बातें ध्यान में अवश्य रखना चाहिए :-

- ❖ ठंड के दिनों में मुर्गी आवास को गरम रखने के लिए मुर्गीपालक को पहले से सावधान हो जाना चाहिए। ठंड से बचने के लिए व्यवसायी को अच्छी ब्रूड़िग कराना अति आवश्यक है। चूजों को ठंड से बचाने के लिए गैस ब्रूडर, बाँस के टोकने के ब्रूडर, पट्रोलियम गैस, सिगड़ी, कोयला, लकड़ी के गिट्टे, हीटर इत्यादि की तैयारी चूजे आने के पूर्व ही कर लेना चाहिए। चूजा घर का